सीबीएसई कक्षा-10 हिंदी 'ब'

टेस्ट पेपर-05

पाठ-02 मीरा के पद

निर्देश -

1. **सभी प्रश्न अनिवार्य है।**
2. **प्रश्न 1 से 3 एक अंक के है।**
3. **प्रश्न 4 से 8 दो अंक के है।**
4. **प्रश्न 9 से 10 पांच अंक के है।**

---

1. मीरा ने अपनी पीर हरने की विनती किससे की है ?
2. श्री कृष्ण ने किस की लाज बचाई थी ?
3. प्रह्लाद भक्त के लिए भगवान ने किसका रूप धरा था ?
4. डूबते हुए गजराज की रक्षा भगवान ने कैसे की ?
5. पहले पद में मीरा ने किन-किन भक्तों का जिक्र किया है जिनकी भगवान ने सहायता की ?
6. मीरा कृष्ण की चाकर क्यों बनना चाहती है ?
7. भगवान की चाकर बनके मीरा क्या-क्या कार्य करेंगी ?
8. मीरा ने श्री कृष्ण के सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है ?
9. मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए l
10. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए :
    बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुंजर पीर
    दासी मीरा लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर l

कक्षा-10 हिंदी 'ब' टेस्ट पेपर-05

पाठ-02 मीरा के पद

आदर्श उत्तर

1. मीरा अपनी पीर हरने की विनती अपने प्रभु कृष्ण से कर रही है|
2. श्री कृष्ण ने द्रौपदी की लाज बचाई |
3. भक्तों के लिए भगवान ने नरसिंह का रूप धरा था |
4. जब गजराज डूब रहे थे, तो उन्होंने अपनी रक्षा के लिए ईश्वर को पुकारा और ईश्वर ने मगरमच्छ को मारकर अपने भक्त की रक्षा की |
5. मीरा ने अपने पद में बताया है कि भगवान ने अपने भक्त प्रहलाद की रक्षा के लिए नरसिंह का रुप धारण किया, द्रौपदी का वस्त्र बढ़ाकर उसका सम्मान बचाया, और डूबते हुए गजराज की मगरमच्छ से रक्षा की |
6. चाकर सदा अपने मालिक के आसपास रहता है इसीलिए मीरा अपने प्रभु की चाकर बनकर उनके आसपास रहना चाहती है |
7. चाकर बनकर मीरा अपने प्रभु के लिए बाग लगाएंगी, वृंदावन की गलियों में उनकी प्रेम के गीत गाएंगी, अपने प्रभु के लिए ऊंचा महल बनाएंगी और नित्य प्रभु के दर्शन पाकर अपने जीवन को सार्थक बनाएंगी |
8. श्री कृष्ण के सौंदर्य का वर्णन करते हुए मीरा कहती हैं, पीले वस्त्र पहने हुए और मोर का मुकुट लगाए हुए श्री कृष्ण बहुत सुंदर दिखाई देते हैं, उनके गले में वैजंती माला सुशोभित हो रही है l वृंदावन की गलियों में मुरली बजाते श्रीकृष्ण के इस रूप को देखकर उनका जीवन धन्य हो गया |
9. मीरा के पदों में राजस्थानी ब्रज और गुजराती मिश्रित भाषा का प्रयोग हुआ है इसके अतिरिक्त पंजाबी खड़ी बोली और पूर्वी बोली का भी प्रयोग किया गया है | मीरा की भाषा भक्तिमय है | इसमें कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं हुआ है | इसमें सहजऔर सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है | मीरा के पद गेय होने के कारण सरलता से समझ आते हैं तथा याद हो जाते हैं|
10. निम्नलिखित पंक्तियों में मीरा अपने प्रभु की कृपा का वर्णन करते हुए कह रही है,हे प्रभु! जिस तरह से तुमने डूबते हुए गजराज की रक्षा की थी तथा उसकी पीर हरी थी उसी तरह मेरे कष्टों का निवारण करो| वह कहती है कि मैं अपने प्रभु गिरिधर नागर की दासी बनने को भी तैयार हूं| मेरे प्रभु जिस तरह तुमने मगर को मारकर अपने भक्त की रक्षा की थी उसी प्रकार मेरी भी रक्षा कीजिए |